# कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

मौन गुरु की छत्रछाया,
हर स्वयंसेवक समाया।
आत्मविश्वासी बना और
आत्मनिर्भर पग बढ़ाया।।

आत्म बल चरित्र बल से,
समर्पण का भाव पाया।
संगठन के शास्त्र के बल,
विविध क्षेत्रों को सजाया।।

## संघर्ष समर्पण सेवा के 100 साल

वार्षिक विशेषांक

# वनयोगी बालासाहब स्मारक भवन के भूमिपूजन के पावन अवसर का ऐतिहासिक क्षण

## मेडिकल कैंप 2025

*विविध गतिविधियों से सजे हर प्रयास।*
*सेवा की राह, संस्कारों का साथ।।*

# कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 36, अंक 4
अक्टूबर 2025 - जनवरी 2026 (विक्रम संवत् 2082)

–: सम्पादक :–
**डॉ. रंजना त्रिपाठी**

-:सह सम्पादक:-
**तारा माहेश्वरी, नीलिमा सिन्हा**

–: सम्पादन सहयोग :–
रजनीश गुप्ता

## पूर्वांचल कल्याण आश्रम

**कार्यालय :**
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
( मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास )
कोलकाता - 6
दूरभाष : 2360 8334

**हावड़ा कार्यालय :**
24/25, डबसन रोड
( हावड़ा एसी मार्केट के पास )
हावड़ा - 711101
दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Sanjay Rastogi, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 29, Ward Institution Street, Near Maniktalla Post Office, Kolkata-700006 and printed at Shreyansh Innovations Pvt. Ltd., 113 Park Street, Kolkata - 700016. Editor : Dr Ranjana Tripathi


# अनुक्रमणिका


- संपादकीय... सेवा की साधना... 2
- वनजीवन : ''तू–मैं'' से... 3
- मकर संक्रांति : शिक्षा, स्वास्थ्य... 4
- पंच परिवर्तन : राष्ट्र निर्माण का... 6
- पद्म श्री 2026 : वनवासी जीवन... 8
- चिकित्सा सेवा प्रकल्प : सेवा... 10
- 61 वनवासी जोडों का सामूहिक... 12
- अनुकरणीय पहल 13
- वनवासी गौरव की अमर... 14
- वनयोगी बालासाहब देशपांडे... 16
- अनुकरणीय समर्पण से आलोकित... 17
- वनजीवन – एक कार्यकर्ता का... 18
- काव्यात्मक पहेली: वन जीवन 18
- चिनसुरा में शिशु मेला : आनंद... 19
- बलिदान दिवस - उमाजी नाईक 20
- भारतीय शिक्षा को भारतीय मन... 21
- बलरामपुर यात्रा : सेवा, संस्कार... 22
- अभिभावक की अनुभूति 23
- स्नेह की सुगंध से... 23
- बोधकथा... शक्ति की नहीं... 24
- कविता... शत वर्षों की साधना 24

*संपादकीय...*

# सेवा की साधना से राष्ट्र निर्माण

वनवासी कल्याण आश्रम केवल एक संगठन नहीं, बल्कि उन अनकहे स्वप्नों और सजीव आशाओं का तीर्थ है, जहाँ सेवा साधना का रूप ले लेती है और संवेदना जीवन का स्वभाव बन जाती है। यह वह प्रवाह है, जो वनवासी अंचलों तक पहुँचकर केवल सहायता का हाथ नहीं बढ़ाता, बल्कि अपनत्व का आलोक जगाकर जीवन के हर सुख-दु:ख में सहभागी बनता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से आरंभ हुई यह यात्रा आज राष्ट्र निर्माण की एक मौन, किंतु अडिग साधना के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। वनवासी समाज भारत की आत्मा का सहज, सरल और सुदृढ़ स्वरूप है। प्रकृति की गोद में पला-बढ़ा यह समाज जीवन को उपभोग की दृष्टि से नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व के भाव से जीता है। परिवार, समुदाय और पर्यावरण के प्रति सम्मान उनके जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग है।

वनवासी कल्याण आश्रम का संकल्प रहा है कि विकास की आँधी में यह आत्मा बिखरे नहीं, बल्कि आत्मसम्मान के साथ और अधिक सशक्त होकर उभरे। सामाजिक समरसता की यही भावना राष्ट्र की जड़ों को गहराई और स्थायित्व प्रदान करती है। शिक्षा के क्षेत्र में आश्रम का कार्य भविष्य के निर्माण की आधारशिला है। छात्रावासों और विद्यालयों में केवल अक्षर ज्ञान नहीं दिया जाता, बल्कि चरित्र का निर्माण किया जाता है। अनुशासन, संस्कार और आत्मविश्वास बच्चों के व्यक्तित्व में स्थायी रूप से अंकित होते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से आश्रम उन दुर्गम क्षेत्रों तक जीवन का स्पर्श पहुँचाता है, जहाँ कभी उपचार केवल एक सपना था। चिकित्सा शिविरों से लौटती संतोषभरी मुस्कानें सेवा की सबसे सशक्त प्रमाणिकता बन जाती हैं। परिवार प्रबोधन के माध्यम से संस्कारों की यह धारा घर-घर तक प्रवाहित होती है। वनवासी जीवन में प्रकृति केवल संसाधन नहीं, माता है। जल, जंगल और भूमि के प्रति कृतज्ञता उनके स्वभाव में रची-बसी है। आश्रम इस चेतना को और अधिक सुदृढ़ करता है, यह स्मरण कराते हुए कि पर्यावरण संरक्षण भविष्य की नहीं, बल्कि वर्तमान की आवश्यकता है। स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के प्रयास स्थानीय कौशल को सम्मान देते हैं और आत्मबल को जागृत करते हैं।

इसी सेवा-साधना की चेतना का सजीव स्वरूप मकर संक्रांति पर्व में भी दृष्टिगोचर होता है। मकर संक्रांति केवल ऋतु परिवर्तन का उत्सव नहीं, बल्कि जीवन में सकारात्मक परिवर्तन और सामाजिक दायित्व का पर्व है। वनवासी कल्याण आश्रम के लिए मकर संक्रांति दान का नहीं, बल्कि दायित्व का पर्व है – जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन के लिए सेवा कार्य संगठित रूप से आगे बढ़ते हैं। इस अवसर पर कार्यकर्ता भाई बहनों के द्वारा लगाये गये कैम्प के माध्यम से वस्तु-संग्रह, व्यक्ति-संग्रह और धन-संग्रह अभियान यह स्पष्ट करते हैं कि पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति से जुड़ने का सशक्त माध्यम हैं। यहाँ सेवा उपकार नहीं, सहयात्रा है। नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता और सहभागिता वनवासी समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा से भावनात्मक रूप से जोड़ती है। पंच परिवर्तन के विचार इस संपूर्ण यात्रा को दिशा देते हैं – एक संतुलित, संवेदनशील और संस्कारित समाज की ओर। कल्याण आश्रम के स्थापना दिवस पर वनयोगी बालासाहब देशपांडे जी की पुण्य स्मृति में जशपुर की पावन भूमि पर स्मारक भवन की नींव रखी गई। यह केवल ईंट-पत्थरों का ढाँचा नहीं, बल्कि सेवा, त्याग और तपस्या से रचा हुआ जीवन-दर्शन है। यह स्मारक निरंतर स्मरण कराएगा कि सच्चा राष्ट्र निर्माण निरंतर, नि:स्वार्थ और संस्कारित सेवा-साधना से होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी वर्ष और मकर संक्रांति के पावन अवसर पर वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से वनवासी भाई-बहनों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर की जा रही यह सेवा-साधना समरस, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का सुदृढ़ संकल्प है।

- डॉ. रंजना त्रिपाठी

# वनजीवन : ''तू–मैं'' से ''हम एक रक्त'' की ओर

- निधि तुलस्यान, सह मंत्री, कोलकाता महानगर महिला समिति

वनजीवन हमारे पूर्वांचल कल्याण आश्रम परिवार का केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक संस्कार यात्रा है - ऐसी यात्रा, जो शहरों में पल रहे बच्चों के हृदय में ''मैं'' और ''तू'' की सीमाओं को तोड़कर ''हम एक रक्त हैं'' की भावना का बीजारोपण करती है। यह कार्यक्रम बच्चों को वन क्षेत्रों में ले जाकर केवल वहाँ का जीवन दिखाता नहीं, बल्कि उन्हें उस जीवन की धड़कनों से परिचित कराता है।

वर्ष 2025 में इसी भावभूमि पर आधारित वनजीवन कार्यक्रम के अंतर्गत 20 बच्चों को गोसाबा छात्रावास ले जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 20 दिसंबर से 23 दिसंबर तक चले इस अनुभवात्मक प्रवास की रचना पुराने अनुभवी कार्यकर्ताओं, नव-कार्यकर्ताओं तथा गोसाबा छात्रावास के समर्पित कार्यकर्ताओं के सामूहिक चिंतन से हुई। यह सहयोग स्वयं में संगठन की जीवंत शक्ति का परिचायक था।

गोसाबा पहुँचते ही बच्चों ने वहाँ के छात्रावास के बच्चों से आत्मीय संबंध स्थापित कर लिया। उनकी दिनचर्या में स्वयं को ढालना, उनके साथ उठना-बैठना, खाना-पीना और खेलना – इन सबके माध्यम से एक ऐसा आत्मीय वातावरण बना, जहाँ कोई ''अतिथि'' नहीं रहा, सभी अपने हो गए। वनवासी और शहरवासी बच्चों का एक साथ भोजन करना और खेलना सामाजिक समरसता की सहज और सजीव तस्वीर प्रस्तुत कर रहा था।

इस प्रवास का सबसे सशक्त पक्ष था - ग्राम जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव। बच्चों ने गाँव में जाकर ग्रामीण जीवन को केवल देखा नहीं, बल्कि जिया। मुर्गी पकड़ने का कौतूहल, तीर-धनुष साधने का रोमांच, बकरी और गौ के बछड़ों को स्नेह से थामना, पेड़ों पर चढ़ना, गाँववासियों के घरों में प्रवेश कर उनके साथ भोजन करना और खेलना – ये सभी अनुभव बच्चों के मन में प्रकृति और श्रम के प्रति सम्मान की भावना भरते चले गए। सरल जीवन की यह पाठशाला मौन रहकर भी बहुत कुछ सिखा गई।

वनवासी नृत्य के सान्निध्य में जब सभी बच्चे एक लय में थिरकने लगे, तब वहाँ कोई भेद नहीं बचा – न भाषा का, न वेश का, न परिवेश का। केवल उल्लास था, अपनापन था और हृदयों को जोड़ने वाली एक अदृश्य डोर थी। समय-समय पर बच्चों ने अपने अनुभव लिखे, सुनाए और साझा किए – जिससे उनकी संवेदनाएँ और अधिक परिपक्व होती चली गईं।

पूरे शिविर के दौरान हमारा शिविर गीत –

''सच्चा वीर बना दे माँ...''

केवल स्वर नहीं बना, वह बच्चों के अंतर्मन में उतरती हुई भावना बन गया। हर गायन के साथ उनके स्वर और संकल्प दोनों सशक्त होते गए।

जिस उद्देश्य को लेकर यह वनजीवन कार्यक्रम आयोजित किया गया था, उसकी पूर्णता तब स्पष्ट दिखाई दी जब बच्चों ने उस जीवन को उत्साह, जिज्ञासा और सम्मान के साथ आत्मसात किया। उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और अनुभवों में आया परिवर्तन इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

अंततः 23 दिसंबर को हम सभी प्रेम, सद्भावना और अविस्मरणीय स्मृतियों की पूँजी लेकर सकुशल कोलकाता लौट आए। वनजीवन हमारे लिए केवल चार दिनों का शिविर नहीं रहा, बल्कि यह मानवीय एकता, सांस्कृतिक समरसता और संस्कारों की अक्षय स्मृति बनकर हमारे मन में सदा के लिए बस गया।

# मकर संक्रांति : शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन की दिशा में दायित्व बोध का पर्व

*- शकुन्तला अग्रवाल, पूर्व क्षेत्र महिला प्रमुख*

मकर संक्रांति केवल एक पर्व नहीं, बल्कि समाज के प्रति दायित्व निभाने का संकल्प है। यह पर्व दान नहीं, बल्कि वनवासी भाई-बहनों के शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन के लिए सामूहिक प्रयास का संदेश देता है। भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं में यह उत्सव पौष संक्रांति, शिशिर संक्रांति, पोंगल, माघ बिहू, माघी, पुसना और हंगराई जैसे नामों से मनाया जाता है। भले ही नाम और परंपराएँ अलग हों, किंतु इसकी मूल भावना एक ही है – नई शुरुआत, सूर्य उपासना, फसल उत्सव और कृतज्ञता।

सूर्य का उत्तरायण होना केवल ऋतु परिवर्तन नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का प्रकाश पहुँचाने का संकल्प है। मकर संक्रांति हमें आत्मकेंद्रित सोच से बाहर निकालकर सेवा, सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर प्रेरित करती है। इसी भावभूमि पर इस वर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर वनवासी भाई-बहनों के शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वावलंबन को सशक्त करने हेतु कोलकाता और हावड़ा महानगर में विभिन्न स्थानों पर महिला एवं पुरुष समितियों के संयुक्त प्रयास से

अनेक स्थानों पर कैम्प लगाए गए, ताकि शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन से जुड़ी सहायता स्वयं चलकर वनवासी अंचलों तक पहुँच सके। कुछ क्षेत्रों में संक्रांति दो दिनों तक मनाई गई और उसी अनुरूप सेवा कार्य भी दो दिनों तक निरंतर चलता

रहा। यह आयोजन केवल पर्व-मनाने का माध्यम नहीं, बल्कि विकास-कार्य को धरातल तक पहुँचाने का सशक्त प्रयास रहा। इन कैम्पों के माध्यम से शिक्षा से जुड़ी आवश्यक सामग्री तथा स्वावलंबन को बढ़ावा देने वाली वस्तुओं और संसाधनों का संग्रह किया गया। वस्तु संग्रह केवल सामग्री तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें भविष्य निर्माण की भावना निहित रही। व्यक्ति संग्रह इस अभियान की प्राणशक्ति बना। समाज के हर वर्ग – महिला, पुरुष, युवा, वृद्ध और बच्चों – ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। विशेष रूप से प्रेरक रहा वह दृश्य, जब कार्यकर्ताओं के परिवारों के बच्चों ने अपने गुल्लकों में संचित जेबखर्च को वनवासी भाई-बहनों के शिक्षा और स्वास्थ्य हेतु समर्पित किया। यह कार्य भावी पीढ़ी में सेवा और सामाजिक दायित्व के संस्कार रोपित करने वाला सिद्ध हुआ।

धन संग्रह का उद्देश्य केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन से जुड़े दीर्घकालीन कार्यों को सशक्त करना रहा। एकत्रित संसाधनों के माध्यम से वनवासी समाज को आत्मनिर्भर, शिक्षित और सम्मानपूर्ण जीवन की ओर आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया। प्रत्येक कैम्प का शुभारंभ आरती के साथ हुआ। प्रात:काल से ही कार्यकर्ता बंधु-भगिनियाँ अनुशासन, उत्साह और समर्पण के साथ सक्रिय रहे। संपूर्ण वातावरण सेवा, श्रद्धा और सामाजिक समरसता के भाव से ओतप्रोत रहा।

मकर संक्रांति हमें यह सिखाती है कि उत्सव केवल आनंद का विषय नहीं, बल्कि समाज के साथ मिलकर आगे बढ़ने का माध्यम है। जब शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन को सेवा का केंद्र बनाया जाता है, तभी सच्चा विकास संभव होता है। इस प्रकार मकर संक्रांति का यह दान पर्व केवल एक पर्व न रहकर पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के लिए वनवासी भाई-बहनों के शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन हेतु समर्पित एक संवेदनशील और राष्ट्रनिर्माणकारी अभियान बन गया।

# पंच परिवर्तन : राष्ट्र निर्माण का जीवन दर्शन

*- नीलिमा सिन्हा, हावड़ा महानगर महिला प्रमुख*

मुख्य वक्ता श्री गुणवंत सिंह कोठारी (राष्ट्रीय संयोजक, हिंदू आध्यात्म एवं सेवा संस्थान – HSSF) ने पंच प्रबोधन विषय पर सारगर्भित उद्बोधन दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ - शताब्दी वर्ष

स्थान : कला कुंज हॉल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर कला कुंज हॉल में आयोजित वैचारिक संगोष्ठी संघ की वैचारिक यात्रा, सामाजिक दायित्व और भावी भारत के निर्माण की दिशा को रेखांकित करने वाला एक महत्वपूर्ण आयोजन सिद्ध हुआ। इस अवसर पर प्रख्यात विचारक एवं वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री गुणवंत सिंह कोठारी जी का ''पंच परिवर्तन'' विषय पर दिया गया उद्बोधन अत्यंत गंभीर, प्रेरणादायी एवं राष्ट्रबोध से ओतप्रोत रहा।

अपने संबोधन के प्रारंभ में श्री गुणवंत सिंह कोठारी जी ने स्पष्ट किया कि संघ के सौ वर्ष केवल इतिहास की उपलब्धियों का उत्सव नहीं हैं, बल्कि यह कालखंड आत्मावलोकन, आत्मशुद्धि और आत्मसंकल्प का है। उन्होंने कहा कि संघ का कार्य किसी एक संगठन तक सीमित न होकर समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास है। इसी परिवर्तन की दिशा और पद्धति को ''पंच परिवर्तन'' के रूप में समाज के समक्ष रखा गया है।

## पंच परिवर्तन का मर्म

श्री कोठारी जी ने पंच परिवर्तन के पाँच आयामों को विस्तार से स्पष्ट किया -

*1. सामाजिक समरसता*

उन्होंने कहा कि भारतीय समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता है। किंतु यह विविधता तभी सार्थक है जब उसमें समरसता और अपनत्व का

भाव हो। जाति, भाषा, क्षेत्र और वर्ग के भेद से ऊपर उठकर जब समाज एकसूत्र में बंधता है, तभी राष्ट्र सशक्त होता है। सामाजिक समरसता केवल विचार का विषय नहीं, बल्कि दैनिक व्यवहार में उतारने की आवश्यकता है।

*2. कुटुम्ब प्रबोधन*

श्री कोठारी जी ने कुटुम्ब को भारतीय संस्कृति की आधारशिला बताते हुए कहा कि संस्कारों की प्रथम पाठशाला परिवार होता है। यदि कुटुम्ब सुदृढ़ होगा तो समाज और राष्ट्र स्वत: सशक्त होंगे। आज के भौतिकतावादी युग में पारिवारिक मूल्यों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से ही संस्कारित पीढ़ी का निर्माण संभव है।

*3. पर्यावरण संरक्षण*

उन्होंने पर्यावरण विषय पर बोलते हुए कहा कि धरती केवल संसाधनों का भंडार नहीं, बल्कि माता के समान पूज्य है। पर्यावरण संरक्षण कोई आधुनिक नारा नहीं, बल्कि भारतीय जीवन दृष्टि का अभिन्न अंग है। प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलना ही स्थायी विकास का मार्ग है। प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वह पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बने।

*4. स्वदेशी भाव*

स्वदेशी को उन्होंने केवल आर्थिक अवधारणा न मानते हुए उसे राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता से जोड़ा। श्री कोठारी जी ने कहा कि स्वदेशी का अर्थ है - अपने श्रम, अपने संसाधन और अपनी प्रतिभा पर विश्वास। जब समाज स्वदेशी को अपनाता है, तब राष्ट्र की आर्थिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता सुदृढ़ होती है।

*5. नागरिक कर्तव्यबोध*

उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया कि अधिकारों की चर्चा के साथ-साथ कर्तव्यों का बोध भी आवश्यक है। कर्तव्यनिष्ठ नागरिक ही लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं। स्वच्छता, अनुशासन, ईमानदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व - ये सभी नागरिक कर्तव्यबोध के अंग हैं।

## राष्ट्र निर्माण का मार्ग

अपने उद्बोधन में श्री गुणवंत सिंह कोठारी जी ने कहा -

''राष्ट्र निर्माण केवल सरकारों या संस्थाओं का कार्य नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।''

पंच परिवर्तन का उद्देश्य समाज में ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है, जो स्वयं बदलकर समाज को बदलने का सामर्थ्य रखते हों।

उनके ओजस्वी एवं सरल शब्दों ने श्रोताओं के मन में गहरी छाप छोड़ी। सभागार में उपस्थित सभी लोग यह अनुभव कर रहे थे कि पंच परिवर्तन कोई सैद्धांतिक चर्चा नहीं, बल्कि जीवन में उतारने योग्य आचरण पद्धति है।

## निष्कर्ष

संघ के शताब्दी वर्ष के इस महत्वपूर्ण आयोजन ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि आने वाला समय केवल चुनौतियों का नहीं, बल्कि अवसरों का काल है। यदि समाज पंच परिवर्तन को आत्मसात कर ले, तो भारत न केवल भौतिक रूप से, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से भी विश्व का मार्गदर्शक बन सकता है।

श्री गुणवंत सिंह कोठारी जी का यह विचारोत्तेजक उद्बोधन पत्रिका के पाठकों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनेगा और उन्हें राष्ट्र सेवा के मार्ग पर सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करेगा।

# पद्म श्री 2026 : वनवासी जीवन-दर्शन के साधकों को राष्ट्र का नमन

*- संदीप चौधरी, कोलकाता-हावड़ा महानगर संभाग प्रमुख*

जिन पगडंडियों पर कभी केवल वनवासी समाज के संघर्षों की पदचाप सुनाई देती थी, आज उन्हीं पथों पर राष्ट्र का सम्मान दीप बनकर आलोकित हुआ है। वर्ष 2026 का पद्म श्री पुरस्कार उन तपस्वी व्यक्तित्वों को समर्पित है, जिन्होंने जीवन को पद, प्रतिष्ठा या लाभ के लिए नहीं, बल्कि सेवा, संस्कार और समर्पण के लिए जिया।

इन विभूतियों का कार्य मंचों पर दिए गए भाषण नहीं, बल्कि धरती पर किया गया मौन तप है – जहाँ शिक्षा आशा बनती है, संस्कृति आत्मसम्मान बनती है और सेवा राष्ट्र-निर्माण का आधार।

## सेवा की अखंड धारा

श्री तेची गुविन, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष,

ने अरुणाचल की पर्वतीय भूमि से राष्ट्रव्यापी संगठनात्मक चेतना का दीप जलाया। उनके नेतृत्व में वनवासी समाज ने अपनी जड़ों को पहचानते हुए विकास के नए आयाम छुए।

त्रिपुरा प्रांत में श्री नरेशचंद्र देव वर्मा ने शिक्षा, सामाजिक समरसता और संगठनात्मक मजबूती के माध्यम से जनजातीय समाज को आत्मनिर्भरता की दिशा दी। उनका जीवन सिखाता है कि नेतृत्व आदेश से नहीं, उदाहरण से जन्म लेता है।

## मातृशक्ति की मौन क्रांति

बस्तर की धरती से उठी श्रीमती बुधरी ताती की सेवा-गाथा जनजातीय नारी की शक्ति, धैर्य और

नेतृत्व का जीवंत प्रमाण है। उन्होंने परंपरा को पिछड़ापन नहीं, बल्कि आत्मबल बनाया।

इसी बस्तर में श्री राम गोडबोले एवं श्रीमती सुनीता

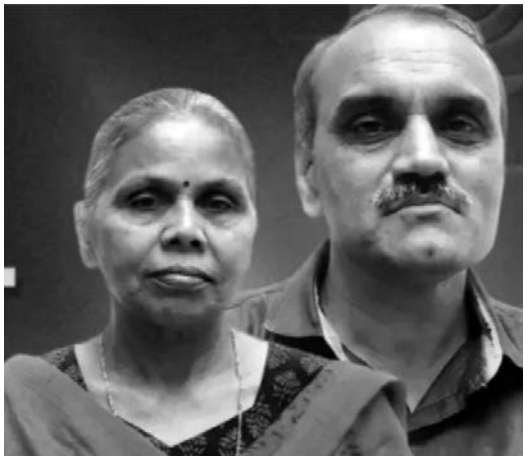

गोडबोले का दांपत्य सेवा का ऐसा यज्ञ है, जिसमें संस्कार, संवेदना और निरंतर समर्पण की आहुति दी गई। उनका जीवन बताता है कि सामाजिक परिवर्तन परिवार से आरंभ होता है।

## संस्कृति के संरक्षक, चेतना के वाहक

श्री चरण हेम्ब्रम ने जनजातीय भाषा, संस्कृति और अस्मिता को जीवित रखने के लिए जो साधना की, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर है।

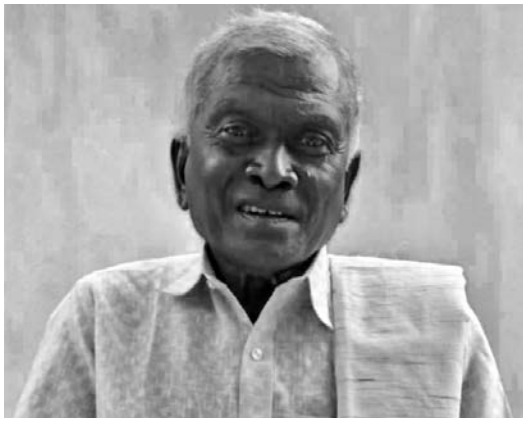

असम की श्रीमती पोखिला लेथ्थेपी ने शिक्षा को केवल अक्षर-ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और जागरूकता का माध्यम बनाया – विशेषकर जनजातीय बालिकाओं के लिए।

राजस्थान के श्री तगाराम भील का जीवन वनवासी समाज के अधिकार, स्वाभिमान और स्वावलंबन के

संघर्ष की प्रेरक कथा है। वे बताते हैं कि परिवर्तन माँग से नहीं, जागरण से आता है।

## सम्मान नहीं, संकल्प

इन सभी कर्मयोगियों को मिला पद्म श्री सम्मान उनके कार्यों का अंत नहीं, बल्कि राष्ट्र की ओर से दिया गया संकल्प है – कि वनवासी समाज की संस्कृति, परिश्रम और मूल्य भारत की आत्मा हैं।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम परिवार की ओर से इन सभी साधकों को कोटि-कोटि नमन। इनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए यह संदेश है– 'सेवा जब साधना बन जाए, तब राष्ट्र स्वयं शीश झुकाता है।'

# चिकित्सा प्रकल्प : सेवा, संवेदना और समर्पण

*- संजीव खेतान, चिकित्सा टोली प्रमुख*

पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता–हावड़ा महानगर द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों के माध्यम से वनवासी क्षेत्रों के समग्र विकास, स्वावलंबन और आत्मसम्मान को सशक्त करने का सतत प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक जागरण - इन सभी आयामों में आश्रम की सेवा यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है। इसी क्रम में अप्रैल माह से चिकित्सा प्रकल्प के अंतर्गत एक समर्पित टोली का गठन किया गया, जो आज सेवा और करुणा की जीवंत मिसाल बन चुकी है।

विभिन्न समितियों से जुड़े कार्यकर्ताओं की रुचि, प्रतिबद्धता और स्वेच्छा से कुल 11 कार्यकर्ता इस चिकित्सा टोली में सम्मिलित हुए। चिकित्सा प्रमुख के मार्गदर्शन में यह टोली उन क्षेत्रों तक पहुँचने का संकल्प लेकर आगे बढ़ी, जहाँ आज भी चिकित्सा सुविधाएँ सीमित हैं और एक शिविर वहाँ आशा की किरण बनकर पहुँचता है।

## चिकित्सा प्रकल्प का उद्देश्य

चिकित्सा टोली का मूल कार्य यह है कि जहाँ से भी शिविर की आवश्यकता का संदेश मिले, वहाँ शीघ्रता से संगठित होकर चिकित्सकीय शिविरों का आयोजन किया जागरण - इन वनवासी भाई-बहन समय पर उपचार पा सकें और उनका जीवन स्वस्थ, सुरक्षित एवं आत्मनिर्भर बन सके।

## सेवा यात्रा : शिविरों का विवरण

प्रथम चिकित्सा शिविर - गोसाबा (5 जुलाई 2025)

दुर्गम और संवेदनशील क्षेत्र गोसाबा में आयोजित यह शिविर सेवा भाव का सशक्त उदाहरण बना।

चिकित्सक : 9
एम. पी. बिड़ला आई हॉस्पिटल से 11 सदस्य
टोली कार्यकर्ता : 24
कुल रोगी : 339
चश्मा वितरण : 79 (+9 विशेष)

नेत्र परीक्षण के दौरान कई ऐसे चेहरे दिखे जिनकी आँखों में वर्षों से धुँधलापन था, और जब चश्मा पहनते ही उन्हें स्पष्ट दिखाई देने लगा, तो उनके चेहरे पर आई मुस्कान ने पूरी टोली को भावविभोर कर दिया।

द्वितीय चिकित्सा शिविर - संदेशखाली
(2 अगस्त 2025)

चिकित्सक टीम : 12

रोगी : 120
ऑपरेशन : 9

यह शिविर केवल उपचार नहीं, बल्कि विश्वास का सेतु था। यहाँ चयनित रोगियों के लिए आगे ऑपरेशन की प्रक्रिया तय की गई, जिससे उन्हें स्थायी राहत मिल सके।

तृतीय शिविर - स्वास्थ्य जागरूकता कार्यशाला
(14 सितंबर 2025)

इस कार्यशाला में उपचार के साथ-साथ स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पर विशेष बल दिया गया। स्वच्छता, पोषण, नेत्र-सुरक्षा और नियमित जांच

जैसे विषयों पर संवाद हुआ, ताकि लोग बीमारी से पहले ही सजग हो सकें।

चतुर्थ चिकित्सा शिविर - दो दिवसीय
(खड़गपुर ग्रामीण क्षेत्र)

यह शिविर सेवा विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा।

प्रथम दिवस - केशियारी
रोगी : 230

द्वितीय दिवस - आहार मुक्ता, नारायणगढ़
चिकित्सक एवं अन्य सहयोगी : 15
टोली कार्यकर्ता : 7
समिति कार्यकर्ता : 3
चश्मा वितरण योजना : 63
ऑपरेशन हेतु चयन : 40 रोगी
ऑपरेशन एवं समग्र देखभाल

ऑपरेशन हेतु चयनित रोगियों को कोलकाता लाकर एम. पी. बिड़ला आई हॉस्पिटल में भर्ती किया जाता है। वहाँ विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा सफल ऑपरेशन के पश्चात उन्हें सुरक्षित रूप से वापस उनके क्षेत्र में पहुँचाया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में दवाइयों, अल्पाहार और आवश्यक देखभाल की पूर्ण व्यवस्था की जाती है, ताकि रोगी और उनके परिजन निश्चिंत रह सकें।

## सेवा का भाव

यह चिकित्सा प्रकल्प केवल आँकड़ों का संकलन नहीं, बल्कि मानव संवेदना की जीवंत अभिव्यक्ति है। यहाँ हर शिविर एक परिवार का रूप ले लेता है - जहाँ चिकित्सक, कार्यकर्ता और रोगी सब एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। वनवासी भाई-बहनों की आँखों में विश्वास और कृतज्ञता का भाव ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है।

## भविष्य की आशा

हमें पूर्ण विश्वास है कि आने वाले दिनों में यह सेवा यात्रा और अधिक क्षेत्रों तक पहुँचेगी। अधिक से अधिक वनवासी भाई-बहनों को स्वास्थ्य लाभ मिलेगा और हम सेवा, समर्पण और संस्कार के इस पथ पर और सुदृढ़ कदमों से आगे बढ़ते रहेंगे।

वनवासी समाज की सेवा - यही हमारा संकल्प, यही हमारी साधना।

# 61 वनवासी जोड़ों का सामूहिक विवाह

*- संजय गोयल, कोलकाता मध्य नगर प्रमुख*

भारतीय संस्कृति में विवाह को अत्यन्त महत्वपूर्ण मांगलिक अनुष्ठान माना जाता है। किन्तु आर्थिक अभाव, सीमित संसाधनों और सामाजिक परिस्थितियों के कारण अनेक वनवासी परिवार विवाह जैसे मंगल संस्कार को उत्सव-भोज और सामाजिक सहभागिता के साथ संपन्न नहीं कर पाते और विवाहित होते हुए भी सामाजिक मान्यता से वंचित रहते हैं। ऐसे में दम्पती साथ-साथ तो रहते हैं, किन्तु सामाजिक सम्मान और सामूहिक उल्लास का अभाव उनके मन में एक अधूरापन छोड़ जाता है। उनका परिवार किसी समाजिक उत्सव में सम्मिलित नहीं हो सकता। यहां तक कि उनके श्राद्ध-कर्म में भी समाज सम्मिलित नही होता। कई बार ऐसे जोड़े तथा उनका परिवार विधर्मियों के प्रलोभन में आकर धर्म परिवर्तन कर लेता है।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पूर्वांचल कल्याण आश्रम, नलहटी (जिला बीरभूम) के तत्वावधान में 61 जनजातीय जोड़ों का सामूहिक विवाह संस्कार भव्य एवं विधिवत रूप से संपन्न हुआ। यह आयोजन सामाजिक समरसता, सेवा भाव, सांस्कृतिक और जनजातीय परम्पराओं के संरक्षण एवं उन्हें समाज में पुन: स्थापित करने का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया। ''तू-मैं एक रक्त'' की भावना को साकार करता यह समारोह समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

यह पुनीत कार्यक्रम 8 फरवरी 2026 को दुर्गा देवी मस्करा सरस्वती शिशु मंदिर से संलग्न प्रांगण, नलहटी में आयोजित किया गया। विवाह संस्कार समाज की परंपराओं एवं रीति-रिवाजों के अनुसार पूर्ण श्रद्धा और विधि-विधान के साथ संपन्न कराया गया। पूरे आयोजन में उत्सव, उल्लास और सामाजिक सहभागिता का अद्भुत वातावरण देखने को मिला।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्याम स्टील इंडस्ट्रीज लिमिटेड के डायरेक्टर श्री पुरुषोत्तम बेरीवाल उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता श्री विनोद उपाध्याय ने विवाह संस्कार की सांस्कृतिक गरिमा और सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षिण बंग के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. चुनाराम मुर्मू की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को विशेष महत्व प्रदान किया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री रमापद पाल, अवकाशप्राप्त प्राध्यापक श्री अमित कुमार चक्रवर्ती, सिविल इंजीनियर श्री संदीप सोरेन, शिक्षिका श्रीमती तापीनास किस्कू तथा समाजसेवी श्री नेपाल मुर्मू, सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सहभागिता कर नवविवाहित युगलों को आशीर्वाद प्रदान किया। मंच पर अखिल भारतीय सह ग्राम विकास प्रमुख श्रीमती राधिका लढ़ा, नलहटी निवासी प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं समाजसेवी श्री राजेंद्र प्रसाद जी मस्करा तथा कोलकाता निवासी प्रतिष्ठित उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री भगवान दास

जी अग्रवाल (भानु बाबू) की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस सामूहिक विवाह आयोजन को सफल बनाने में सामूहिक विवाह टोली के सक्रिय सदस्यों – श्री संजय गोयल, श्री विवेक चिरानिया, श्री कमल सिंह पगारिया एवं श्री राजकुमार सरावगी ने विशेष योगदान दिया। इनके साथ अन्य सहयोगी कार्यकर्ताओं में श्री संजीव खेतान, श्री विवेक अग्रवाल, श्री कैलाश गुप्ता, श्री पीयूष अग्रवाल तथा श्री देवकीनंदन बाजोरिया का सराहनीय सहयोग रहा।

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए नलहटी के स्थानीय समाज की भूमिका अनुकरणीय थी। विशेष रूप से श्री सुनील मस्करा एवं श्री मनोहर चितलांगिया ने विवाह-स्थल तथा हर प्रकार की स्थानीय व्यवस्था हेतु दिन-रात एक कर अत्यंत समर्पित भाव से तन-मन-धन से अपना योगदान दिया।

सभी के सामूहिक प्रयासों से 61 जोड़े वैवाहिक जीवन में विधिवत प्रवेश कर सके। यह केवल एक संख्या नहीं, बल्कि 61 परिवारों के जीवन में नई आशा, सामाजिक सुरक्षा और सम्मान की स्थायी शुरुआत का प्रतीक है।

यह आयोजन सामाजिक समरसता का सशक्त संदेश देने वाला सिद्ध हुआ, जहाँ आर्थिक असमानता और सामाजिक भेदभाव की दीवारें स्वत: ही टूटती दिखाई दीं। इस समारोह ने यह स्पष्ट किया कि विवाह केवल वैभव प्रदर्शन का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कार, सहयोग और समाज की एकता का उत्सव है। नि:संदेह, इस आयोजन में सहयोग देने वाले सभी समाजसेवियों, दानदाताओं एवं कार्यकर्ताओं का योगदान अनुकरणीय और प्रेरणादायक रहा। ऐसे प्रयास समाज में सेवा, करुणा और संस्कारों की ज्योति को निरंतर प्रज्वलित रखते हैं। यह आयोजन केवल एक समारोह नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने और सशक्त बनाने की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

# अनुकरणीय पहल

*—— - विवेक चिरानिया, सह संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर*

इस चित्र में दिखाई दे रहा गुल्लक केवल सिक्कों का संग्रह नहीं, बल्कि संस्कारों की संचित पूँजी है। इसे खोलकर निकाले जा रहे पैसे 7 वर्ष की एक प्यारी बच्ची यति के हैं, जो तीसरी कक्षा में अध्ययनरत है। मकर संक्रांति के पावन अवसर पर विद्यालय जाने से पहले वह अपनी गुल्लक अपने पापा को सौंपते हुए सहज भाव से कहती है –"इसमें जितने भी पैसे हैं मकर संक्रांति कैम्प में जमा कर दीजिए।''

यति की यह पहल कोई एकदिन का भाव नहीं है। बहुत छोटी उम्र से वह अपने पापा के साथ कैम्प में आती रही, वहीं बैठकर सब से बतियाती, कैम्प का वातावरण आत्मसात करती रही। बीते दो वर्षों से वह स्वयं विद्यालय में रहती है, लेकिन उसका गुल्लक निरंतर शिविर तक पहुँचता रहा है। दूसरों को सहयोग करते देख वह प्रेरित हुई और आज स्वयं दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बन चुकी है।

यह घटना बताती है कि सेवा और संवेदना का संस्कार परिवार के आचरण से संचारित होता है। यति की छोटी-सी पहल यह सिखाती है कि उम्र सेवा का मापदंड नहीं होती – भाव ही उसका वास्तविक आधार होता है। ऐसी अनुकरणीय पहलें समाज में सकारात्मक परिवर्तन की सबसे सशक्त नींव रखती हैं और यह विश्वास जगाती हैं कि राष्ट्र निर्माण की यात्रा बालमन से ही प्रारंभ हो सकती है।

# वनवासी गौरव की अमर ज्योति और गणतंत्र की आत्मा : रानी माँ गाइदिन्ल्यू

भारत केवल भौगोलिक सीमाओं का राष्ट्र नहीं, बल्कि विविध संस्कृतियों, परंपराओं और जीवन दर्शन की जीवंत धारा है। इस विराट सांस्कृतिक प्रवाह में वनवासी समाज वह आधार स्तंभ है, जिसने प्रकृति, संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा करते हुए राष्ट्र की आत्मा को सशक्त बनाए रखा। भारत का गणतंत्र दिवस हमें जहाँ संविधान की गरिमा का स्मरण कराता है, वहीं यह उन वनवासी वीरों और वीरांगनाओं के अदम्य साहस को भी प्रणाम करने का पावन अवसर है, जिन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। इस गौरवगाथा की तेजस्विनी प्रतीक थीं – वनवासी समाज की अमर वीरांगना रानी माँ गाइदिन्ल्यू।

नागा पर्वतों की शांत गोद में जन्मी गाइदिन्ल्यू केवल एक बालिका नहीं, बल्कि वनवासी जीवन दर्शन की सशक्त अभिव्यक्ति थीं। 26 जनवरी 1915 को जन्मी इस तेजस्विनी ने प्रकृति के सान्निध्य में पलते हुए आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और सामुदायिक जीवन के संस्कार आत्मसात किए। वनवासी समाज सदैव से प्रकृति के साथ संतुलन, परंपराओं के संरक्षण और आत्मसम्मान की रक्षा का प्रतीक रहा है। इसी जीवन दर्शन ने गाइदिन्ल्यू के भीतर राष्ट्रप्रेम और संघर्ष की ज्वाला प्रज्ज्वलित की।

किशोरावस्था में ही उन्होंने अपने गुरु जादोनांग के नेतृत्व में विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष का संकल्प लिया। उस समय अंग्रेजी शासन केवल राजनीतिक नियंत्रण तक सीमित नहीं था, बल्कि वह वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान, आस्था और स्वतंत्र जीवन शैली को भी नष्ट करने का प्रयास कर रहा था। ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में गाइदिन्ल्यू ने वनवासी समाज को संगठित किया और उन्हें अपने अधिकारों तथा परंपराओं की रक्षा के लिए जागृत किया।

उनका संघर्ष केवल स्वतंत्रता प्राप्ति का आंदोलन नहीं था, बल्कि वह वनवासी अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान का भी महायज्ञ था। उनकी बढ़ती लोकप्रियता और नेतृत्व क्षमता से भयभीत होकर अंग्रेजों ने उन्हें किशोर अवस्था में ही बंदी बना लिया। लगभग चौदह वर्षों का कारावास उनके

शरीर को बाँध सका, परंतु उनके विचारों और संकल्प को कभी पराजित नहीं कर पाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी रानी माँ गाइदिन्ल्यू ने वनवासी समाज के उत्थान, सांस्कृतिक संरक्षण और राष्ट्रीय एकात्मता के लिए अपना जीवन समर्पित किया। उनके व्यक्तित्व में वनांचल की दृढ़ता, मातृत्व की करुणा और राष्ट्र सेवा का तेज अद्भुत रूप से समाहित था। पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा उन्हें दी गई 'रानी' की उपाधि उनके अद्वितीय नेतृत्व और जनसमर्पण का सम्मान थी, किन्तु वनवासी समाज के लिए वे सदैव संरक्षण और प्रेरणा की प्रतीक 'रानी माँ' ही रहीं।

भारत का गणतंत्र विविधता में एकता का सजीव उदाहरण है। इस एकता की जड़ों में वनवासी समाज की जीवन पद्धति, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सांस्कृतिक चेतना का गहरा योगदान है। वनवासी समाज ने सदैव राष्ट्र की सीमाओं, संस्कृति और परंपराओं की रक्षा में अग्रणी भूमिका निभाई है। रानी माँ गाइदिन्ल्यू का जीवन इस सत्य का उज्ज्वल प्रमाण है कि राष्ट्र की शक्ति उसकी जनजातीय चेतना और सांस्कृतिक जड़ों से ही पुष्ट होती है।

आज जब वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक जीवन मूल्यों पर संकट उत्पन्न हो रहा है, तब रानी माँ गाइदिन्ल्यू का जीवन हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने, संस्कृति के संरक्षण और राष्ट्र के प्रति समर्पण का मार्ग दिखाता है। उनका जीवन यह सिखाता है कि सच्चा विकास तभी संभव है जब वह अपनी सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़े।

रानी माँ गाइदिन्ल्यू केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि वनवासी स्वाभिमान की वह अमर ज्योति हैं, जो युगों-युगों तक राष्ट्र चेतना को आलोकित करती रहेगी। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि भारत का गणतंत्र केवल संविधान की धाराओं में नहीं, बल्कि वनांचलों की पगडंडियों, जनजातीय गीतों, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा में जीवंत है।

जब-जब राष्ट्र अपनी जड़ों को स्मरण करेगा, जब-जब वनवासी गौरव की गाथाएँ गाई जाएँगी, तब-तब रानी माँ गाइदिन्ल्यू का तेजस्वी व्यक्तित्व प्रेरणा बनकर हमारे सम्मुख खड़ा होगा। उनका त्याग, साहस और समर्पण हमें यह संकल्प दिलाता है कि हम अपनी संस्कृति, प्रकृति और राष्ट्र की अखंडता की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें।

रानी माँ गाइदिन्ल्यू वनवासी गौरव की वह शाश्वत ज्योति हैं, जो भारत की आत्मा में सदैव प्रज्वलित रहेगी और आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्र सेवा, संस्कृति संरक्षण और स्वाभिमान के मार्ग पर निरंतर प्रेरित करती रहेगी।

# वनयोगी बालासाहब देशपांडे स्मारक : कार्यकर्ताओं की सामूहिक भावांजलि

*- महेश मोदी, अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष, वनवासी कल्याण आश्रम*

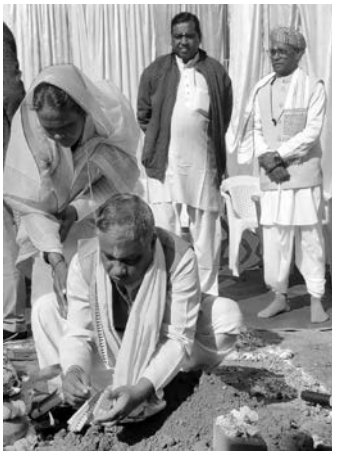

कल्याण आश्रम के संस्थापक, वनवासी जीवन को अपनी तपोभूमि बनाने वाले वनयोगी बालासाहब देशपांडे जी का संपूर्ण जीवन जनजातीय समाज के उत्थान, स्वाभिमान और सर्वांगीण विकास को समर्पित रहा। उन्होंने सेवा को केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि जीवन का संकल्प बनाया। जनजातीय समाज के बीच रहकर, उनके जीवन, संस्कृति, परंपराओं और संघर्षों को आत्मसात करते हुए उन्होंने उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया।

बालासाहब जी का जीवन स्वयं में एक जीवंत प्रेरणा है – जो देशभर के कार्यकर्ताओं को निरंतर जनजातीय समाज की उन्नति हेतु समर्पित भाव से कार्य करने की दिशा देता रहा है। उनकी तपस्या, दृष्टि और संकल्प आज भी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के लिए पाथेय बने हुए हैं।

इसी प्रेरणा को चिरस्थायी स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ के जशपुर नगर में वनयोगी बालासाहब देशपांडे स्मारक के निर्माण का संकल्प लिया गया। इस स्मारक हेतु संग्रह कार्य पूर्ण हो चुका है तथा 13 दिसंबर को भूमि पूजन संपन्न हो चुका है। लक्ष्य है कि वर्ष 2027 में इस स्मारक का भव्य उद्घाटन हो।

यह स्मारक केवल ईंट -पत्थर से बनी संरचना मात्र नहीं, बल्कि उस विराट सेवा-यज्ञ का प्रतीक बनेगा, जिसे बालासाहब जी ने अपने जीवन से प्रज्वलित किया। यह स्थान देशभर के कार्यकर्ताओं के लिए एक प्रेरणा केंद्र के रूप में विकसित होगा – जहाँ सेवा, समर्पण और सामाजिक दायित्व की भावना और अधिक सुदृढ़ होगी।

इस स्मारक के माध्यम से वर्तमान कार्यकर्ताओं के साथ-साथ भावी पीढ़ी को भी इस महान अभियान से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा, ताकि जनजातीय समाज के उत्थान का यह सतत प्रवाह निरंतर आगे बढ़ता रहे।

संगठन का यह स्पष्ट संकल्प रहा है कि स्मारक का निर्माण वर्तमान एवं पूर्व कार्यकर्ताओं के सहयोग, सहभागिता और समर्पण से ही संपन्न हो। इसी सामूहिक भावना, कृतज्ञता और दायित्वबोध के साथ कार्यकर्ताओं द्वारा दिया गया सहयोग पूर्णता को प्राप्त हुआ। सहयोग राशि का संग्रह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जो इस स्मारक को सभी कार्यकर्ताओं की साझा श्रद्धा, उत्तरदायित्व और संकल्प का जीवंत प्रतीक बनायेगा। इसी भावभूमि पर यह अभियान निरंतर आगे बढा है।

बालासाहब जी के प्रति यह विनम्र श्रद्धांजलि वस्तुत: उनके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाने और उनके स्वप्नों को साकार करने का संकल्प है – जिसमें प्रत्येक कार्यकर्ता की सहभागिता अपेक्षित ही नहीं, बल्कि अमूल्य है।

# अनुकरणीय समर्पण से आलोकित सेवा पथ

*- तारा माहेश्वरी, सह संपादक*

27 वर्ष की अल्पायु में माही दोशी ने सेवा, समर्पण और राष्ट्रभावना का ऐसा प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो अत्यंत सराहनीय और अनुकरणीय है।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम के सेवा कार्यों, विशेषकर वनवासी समाज के उत्थान, शिक्षा, संस्कार और स्वावलंबन हेतु किए जा रहे प्रयासों से प्रभावित होकर माही ने जो निर्णय लिया, वह उनके उच्च संस्कारों और संवेदनशीलता को दर्शाता है। एक कार्यालय में कार्यरत माही ने अपनी व्यक्तिगत बचत से एक चिकित्सा शिविर का दायित्व (1,00,000), एक जलाशय के निर्माण का खर्च (35,000), एवं छात्रावास के एक छात्र का दायित्व (15,000) अर्थात कुल डेढ़ लाख रुपये का चेक समर्पित किया। उनका यह अनुदान केवल आर्थिक सहयोग नहीं, बल्कि वनवासी समाज के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का जीवंत उदाहरण है।

आज के समय में जब लोग प्राय: अपने व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं तक सीमित हो जाते हैं, ऐसे में माही का यह योगदान समाज के लिए प्रेरणा का दीप बनकर उभरा है। उनका सहयोग यह संदेश देता है कि सेवा और सहयोग का मूल्य धन की मात्रा से नहीं, बल्कि भावना की पवित्रता और निष्ठा से मापा जाता है।

माही दोशी का यह सेवा भाव न केवल युवा कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत है, बल्कि यह सिद्ध करता है कि यदि मन में पवित्र प्रेरणा हो तो प्रत्येक व्यक्ति समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उनका यह अनुकरणीय योगदान निश्चित ही सेवा पथ पर अग्रसर कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं को प्रेरित करता रहेगा।

उनके इस पुण्य एवं प्रेरणादायी कार्य के लिए पूर्वांचल कल्याण आश्रम परिवार हृदय से आभार प्रकट करता है तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हैं।

## सेवा और संवेदनशीलता का अनुकरणीय उदाहरण

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की पूर्णकालिक कार्यकर्ता दक्षिण व दक्षिण मध्य महिला प्रमुख श्रीमती कौशल्या हेगड़े को लेक टाउन महिला समिति द्वारा स्नेहपूर्वक स्कूटी प्रदान किया जाना नि:संदेह एक अत्यंत अनुकरणीय पहल है। यह केवल एक साधन का दान नहीं, बल्कि एक समर्पित कार्यकर्ता के श्रम, त्याग और निष्ठा के प्रति समाज की संवेदनशील स्वीकृति है।

यह विशेष उल्लेखनीय है कि यह सहयोग बिना किसी आग्रह के, स्वत: प्रेरणा से दी गई। इस पुनीत कार्य को शशि दी एवं शकुन्तला दी की टीम ने पूर्ण कर यह सिद्ध किया कि जब नीयत सेवा की हो, तो साधन स्वयं मार्ग खोज लेते हैं।

ऐसी पहलें न केवल कार्यकर्ताओं के कार्य को सुगम बनाती हैं, बल्कि समाज में सेवा, सहयोग और कर्तव्यबोध की प्रेरणा भी जगाती हैं। लेक टाउन महिला समिति, शशि दी, शकुन्तला दी एवं समस्त सहयोगी टीम के प्रति हृदय से आभार।

# वनजीवन – एक कार्यकर्ता का अनुभव

*- रुचि अग्रवाल, युवा कार्यकर्ता*

हम अपने बच्चों को पढ़ाते तो हैं, पर उन्हें जीवन जीना सिखाना सबसे कठिन कार्य होता है। वनजीवन कार्यक्रम इस दिशा में एक अत्यंत सार्थक और प्रेरणादायी प्रयास है।

गोसाबा छात्रावास में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने केवल भ्रमण नहीं किया, बल्कि संस्कारों और जीवन मूल्यों का सजीव अनुभव प्राप्त किया। गाँव का सहज और प्राकृतिक जीवन – पेड़ों पर चढ़ना, पशुओं से स्नेह करना, खेतों और प्रकृति को निकट से समझना तथा वनवासी बच्चों के साथ भोजन, खेल और नृत्य में सहभागी होना – इन सबने बच्चों के भीतर स्वाभाविक आत्मविश्वास और आत्मीयता का भाव विकसित किया।

इस अनुभव ने शहर और गाँव के बीच की दूरी को स्वत: समाप्त कर दिया। सभी बच्चे आपसी भेदभाव भुलाकर एक परिवार की तरह घुल-मिल गए। संध्या वंदन, प्रार्थना, सामूहिक गायन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बच्चों की छिपी प्रतिभाओं को उजागर करने का सशक्त अवसर प्रदान किया।

कार्यक्रम के पश्चात बच्चों के व्यवहार, उनके दृष्टिकोण और आत्मविश्वास में आया सकारात्मक परिवर्तन इस बात का प्रमाण है कि वनजीवन वास्तव में जीवन का सच्चा पाठ सिखाने वाला अभियान है।

एक कार्यकर्ता के रूप में इस संस्कारमय और जीवनोपयोगी प्रयास को साकार होते देख हृदय गर्व और संतोष से भर उठता है। इस प्रेरणादायी आयोजन के लिए पूर्वांचल कल्याण आश्रम के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

# काव्यात्मक पहेली: वन जीवन

पेड़ों की छाया मेरा आकाश,
नदियों से जुड़ा मेरा विश्वास।
जहाँ जीवन सरल, मन भी पावन –
मैं हूँ धरती की गोद में बसा ——।

मिल-जुलकर जीना मेरा धर्म,
सुख-दु:ख में एक-सा कर्म।
मैं अकेला नहीं, हम सब साथ –
मुझे कहते हैं ——।

न गीत काग़ज़ पर लिखे गए,
न ग्रंथों में सजे हुए।
जीवन से सीखी हर एक सीख –
वही मेरी ——।

पीढ़ी-पीढ़ी जो बहती जाए,
बिना लिखे इतिहास सुनाए।
रीति-रिवाज, पर्व और मान –
मैं कहलाती हूँ ——।

मुझसे जीवन, मुझसे श्वास,
मुझसे ही हर जीव का विकास।
यदि मैं न रहूँ, कुछ न बचे –
मैं हूँ सबकी ——।

*उत्तर इसी अंक में...*

# चिनसुरा में शिशु मेला : आनंद और अपनत्व से भरा एक दिन

*- पीयूष अग्रवाल, वनयात्रा प्रमुख*

रविवार, 30 नवंबर का दिन हमारे लिए स्मृतियों से भरा रहा। इस दिन हम चिनसुरा में आयोजित शिशु मेला में सहभागी बने। क्षेत्र के 10 शिशु शिक्षा केंद्रों से आए लगभग 120 बच्चों के साथ यह आयोजन अत्यंत उल्लासपूर्ण रहा। कोलकाता से 18 कार्यकर्ता तथा हमारे कुछ सदस्यों के तीन छोटे बच्चे भी साथ थे, जिनके लिए यह अनुभव बिल्कुल नया और अविस्मरणीय था।

कार्यक्रम की शुरुआत विभिन्न सामूहिक गतिविधियों की तैयारी और अभ्यास से हुई, ताकि बच्चों के साथ उन्हें साझा किया जा सके। ''मैं शिवाजी'', ''दुर्गा काली'' और ''एमनी-तेमनी'' जैसे सरल और रोचक खेलों से माहौल जीवंत हो उठा। इसके बाद बच्चों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गई।

अल्पाहार के दौरान दौड़ प्रतियोगिताओं और पुरस्कार वितरण की तैयारी की गई। प्रत्येक शिशु शिक्षा केंद्र को बच्चों के लिए ड्राइंग बुक, क्रेयॉन, नाइट सूट सेट तथा शिक्षक के लिए सूट और शॉल प्रदान किए गए।

दौड़ प्रतियोगिताएँ विशेष आकर्षण रहीं। बच्चों के लिए 8-10 राउंड आयोजित किए गए, इसके बाद शिक्षकों और फिर साथ आई माताओं की दौड़ हुई। बच्चों की आँखों में अपने शिक्षकों और माताओं को दौड़ते देख जो उत्साह और गर्व था, वह किसी पुरस्कार से कम नहीं था।

इसके बाद फिर से सामूहिक खेल शुरू हुए। अब बच्चे पूरी तरह घुल-मिल चुके थे और अपने पसंदीदा खेल सुझाने लगे। ''जोल-डांगा'', ''कबड्डी'' और ''रूमाल-चोर'' जैसे खेलों के साथ-साथ नृत्य, गायन, योग और कविता पाठ द्वारा बच्चों की प्रतिभा को मंच मिला।

स्वादिष्ट खिचड़ी और आलू की सब्ज़ी के भोजन के बाद पुरस्कार वितरण हुआ। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को ऊनी टोपी, द्वितीय को स्टील गिलास और तृतीय को स्टील कटोरी प्रदान की गई। विजेता माताओं को कंबल और शिक्षकों को साड़ियाँ भेंट की गईं। हमारे साथ आईं छोटी बच्चियों ने अतिथि के रूप में पुरस्कार वितरित किए, जो सभी के लिए आनंद का विशेष क्षण रहा।दिन के अंत में हम थके अवश्य थे, पर मन आनंद, संतोष और आत्मीयता से भरा हुआ था। यह दिन हँसी, सीख और आपसी जुड़ाव का सुंदर संगम था। वनवासी कल्याण आश्रम के इस प्रयास ने एक बार फिर यह अनुभूति कराई कि सेवा और स्नेह से बड़ा कोई उत्सव नहीं।

ऐसे ही पलों को फिर जीने की आशा के साथ हम लौटे।

# बलिदान दिवस - उमाजी नाईक

*- संकलित*

उमाजी नाइक को सम्मानजनक रूप से विशिष्ट क्रांतिवीर राजे उमाजी नाइक के रूप में भी जाना जाता है एक भारतीय क्रांतिकारी जिन्होंने 1826 से 1832 के आसपास भारत में ब्रिटिश शासन को चुनौती दी थी। वे भारत के सबसे पहले स्वतंत्रता सेनानी थे। (ईस्ट इंडिया कंपनी और कंपनी के नियम के खिलाफ)

उमाजी नाइक का जन्म 7 सितंबर 1791 को रामोशी जनजाति में हुआ था। वह महाराष्ट्र (तब मराठा साम्राज्य) में एक स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी नेता थे और रामोशी समुदाय के थे, जो तेलंगाना से चले गए और मराठा काल में महाराष्ट्र में बस गए लेकिन बाद में ब्रिटिश शासन के दौरान चोरों की एक जनजाति के रूप में ब्रांडेड किया गया।

ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन से पहले, रामोश मराठा शासन के तहत काम करते थे। ये रामोशी मराठा क्षेत्र की निगरानी के लिए और मराठा काल में महाराष्ट्र में मराठा किलों की सुरक्षा के लिए काम करते थे। रामोशी (रॉ) को मराठों द्वारा रात्रि गश्त और पुलिसिंग का काम सौंपा गया था। इस काम के कारण उन्हें कुछ विशिष्ट गांवों से कर लेने का अधिकार था। लेकिन अंग्रेजों द्वारा मराठा साम्राज्य की हार के बाद, इस अधिकार का उल्लंघन हो गया, जिसके कारण रामोशियों ने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष शुरू कर दिया।

मराठा साम्राज्य के पतन के तुरंत बाद, उमाजी नाइक ने अंग्रेजों के खिलाफ एक छोटी सेना खड़ी की। 1826 में उमाजी नाइक ने खुद को राजा घोषित किया। 1831 में उन्होंने ब्रिटिश कमांडेंट्री और घुड़सवार सेना को मारने और उनकी संपत्ति को लूटने के लिए एक उद्घोषणा के साथ अपनी कमान का प्रसार किया। उमाजी ब्रिटिश राज के खिलाफ संघर्ष के दौरान सतारा, कुरुद, मंडी देवी कलबाई के पहाड़, खोपोली खंडाला और बोरघाट के पहाड़ों में रहते थे। उन्होंने अपना डाक टिकट जारी किया, जिसमें उन्होंने लिखा 'उमाजीराज नाइक, मुक्कम डोंगर'। उमाजी ने जेजुरी के पुलिस स्टेशन / मुख्यालय पर हमला किया और वहां पुलिसकर्मियों को मार डाला। रामोशी लोग अंग्रेजों और ब्रिटिश राज के प्रति निष्ठावान लोगों को दंडित करते थे। उमाजी ब्रिटिश सरकार का पैसा लूट कर गरीब लोगों को दे देते थीं । अपने अच्छे काम के कारण गरीब लोगों में उमाजी के प्रति आगाध श्रद्धा एवं प्यार था। जब अंग्रेज उमाजी को नियंत्रित नहीं कर पाई तब अंग्रेजों ने उमाजी के साथ एक समझौता किया। जिसके अनुसार अंग्रेजों ने उन्हें 120 बीघा जमीन दी और रामोशी लोगों को सरकारी नौकरी देने का वादा किया। इस समझौते के बाद उमाजी ने कुछ समय के लिए अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध बंद कर दिया। लेकिन शांति लंबे समय तक नहीं चली । उमाजी नाइक रामोशी को पकड़ने के लिए; ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अधिकारी मकिंटोश को नियुक्त किया। मकिंटोश की कमान के तहत कप्तान वाइड, लिविंगस्टन, लुकाण जैसे बड़े ब्रिटिश पुलिस अधिकारियों ने उमाजी को गिरफ्तार करने के लिए योजना बनाई और ऑपरेशन शुरू किया।

उमाजी को पकड़ने के लिए, ब्रिटिश सरकार ने 10,000 रुपये के इनाम की घोषणा की। कालू और नाना कुलकर्णी ने उसे धोखा दिया और उसे पुणे में मुलशी के पास एवलस ले गए और नाना ने 15 दिसंबर 1831 को उमाजी को पकड़ लिया और ब्रिटिश को सौंप दिया। अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार किया, पूछताछ की और फिर उन्हें दोषी ठहराया जिसके बाद 3 फरवरी 1832 को ईस्ट इंडिया कंपनी ने उन्हें पुणे में मृत्युदंड दिया।

पुणे में उमाजी नाइक को ब्रिटिश सरकार ने 3 फरवरी, 1832 को तहसील कार्यालय में फाँसी दी थी। जनता के दिलों में दहशत फैलाने के लिए उनके शव को तीन दिनों तक पीपल के पेड़ से लटका दिया गया था।

# भारतीय शिक्षा को भारतीय मन भारतीय भाषा और भारतीय अनुभव से ही शक्ति मिलेगी

*- अश्विनी शर्मा, वरिष्ठ चिंतक*

कुछ समय पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद में अपने एक भाषण में मैकाले की शिक्षा पद्धति से बाहर निकलने की आवश्यकता पर जोर दिया और वर्ष 2035 तक इसके प्रभावों को पूरी तरह समाप्त करने का संकल्प लिया। मैकाले की शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य भारतीय समाज में आधुनिकता लाना नहीं था बल्कि ऐसे भारतीय तैयार करना था जो शरीर से भारतीय हों लेकिन विचारों और दृष्टिकोण में अंग्रेज। इस नीति ने हमारी प्राकृतिक सोच, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और भाषाई विविधता को कमजोर किया।

अनेक भाषाएँ विलुप्त हो गई, केवल शब्द नहीं मारे बल्कि वह संपूर्ण जीवन दृष्टि चली गई जो पीढ़ियों तक व्यवहार, अनुभव और परंपरा के माध्यम से हस्तांतरित होती थी। पुस्तकों से अधिक जो ज्ञान अनुभव आधारित होता है वह भी नष्ट हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह मैकाले की शिक्षा पद्धति की देन है। भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से इस ऐतिहासिक भूल को सुधारने की दिशा में एक कदम अवश्य उठाया है।

इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, मातृभाषा में शिक्षा और स्वदेशी दृष्टिकोण को महत्व दिया गया है जो सराहनीय है। परंतु केवल नीतियाँ बनाने से परिवर्तन नहीं आता उसे लागू करने वाले विद्वान, शिक्षक और संस्थान भी सक्षम होने चाहिए। दुर्भाग्य यह है कि कई राज्यों में भारतीयता और परंपरा के नाम पर बंटवारा है जो ऐसे हाथों में दे दिया जाता है जिन्हें स्वयं विषय का ज्ञान नहीं होता। जब ऐसे लोग नीति लागू करेंगे तो परिणाम भी वैसा ही मिलेगा - ऊपर से परिवर्तन, भीतर से शून्यता।

यदि हम वास्तव में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित करना चाहते हैं तो योग्य विद्वानों की पहचान और चयन सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। स्थानीय भाषाओं में ज्ञान उत्पादन और शोध को प्रोत्साहन देना होगा। समाज समुदाय व प्रकृति आधारित शिक्षा को कक्षा तक पहुंचाना होगा। मैकाले की शिक्षा पद्धति ने भारतीय समाज को भीतर से तोड़ा। समाज की आत्मा को कमजोर किया। अब समय है हम अपनी टूटी हुई परंपराओं को फिर से जोड़ें। जब तक हम भारतीय ज्ञान के स्रोतों भाषण और परंपराओं को पुनर्जीवित नहीं करेंगे तब तक किसी भी शिक्षा क्रांति की सफलता अधूरी रहेगी। भारतीय शिक्षा को भारतीय मन भारतीय भाषा, और भारतीय अनुभव से ही शक्ति मिलेगी।

## अमृत वचन

*ईश्वर हर प्राणी में बसता है, इसलिए सबमें प्रेम और करुणा रखो।*

*– संत रविदास*

# बलरामपुर यात्रा : सेवा, संस्कार और समर्पण का जीवंत अनुभव

*- प्रीति अग्रवाल*

**बलरामपुर यात्रा : सेवा की धूप में खिलते सपने**

कुछ यात्राएँ केवल दूरी तय नहीं करतीं, वे मन की गहराइयों तक पहुँच जाती हैं। बलरामपुर की यह यात्रा भी मेरे लिए ऐसी ही रही - जहाँ सेवा, संस्कार और संवेदना एक साथ धड़कते हुए महसूस हुए। श्रीमती शकुन्तला बागड़ी जी के साथ पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यों को निकट से देखने का जो सौभाग्य मुझे मिला, उसने जीवन को नई दृष्टि दी।

हम रेल से पुरुलिया पहुँचे। स्टेशन पर आश्रम द्वारा संचालित गर्ल्स हॉस्टल की संचालिका आत्मीय मुस्कान के साथ हमें लेने आईं। हॉस्टल में प्रवेश करते ही एक अपनापन-सा महसूस हुआ। यहाँ लगभग 25-30 बालिकाएँ रहती हैं - जो पढ़ाई के साथ-साथ सिलाई शिक्षा केंद्र में प्रशिक्षण लेकर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं। उनके हाथों में हुनर था, आँखों में आत्मविश्वास और मन में आगे बढ़ने का संकल्प। सादा, स्वच्छ वातावरण और प्रेम से परोसा गया भोजन मानो माँ के हाथों के स्वाद जैसा लगा।

इसके बाद हम कार से लगभग एक घंटे की यात्रा कर बलरामपुर पहुँचे। यहाँ स्थित बॉयज़ हॉस्टल में कक्षा 5 से 12 तक के लगभग 35 आदिवासी बालक रहते हैं। बच्चों का अनुशासन देखकर मन श्रद्धा से भर गया। वे अपने छोटे-से संसार को अपने ही हाथों से सँवारते हैं – सफाई, झाड़ू-पोछा, बर्तन और पूरी व्यवस्था स्वयं संभालते हुए। उनके चेहरे पर आत्मसम्मान था, व्यवहार में विनम्रता और कर्म में जिम्मेदारी।

बच्चों का अतिथि-सत्कार हृदय को छू लेने वाला था। पढ़ाई में लीन बच्चे, मैदान में दौड़ती ऊर्जा और फुटबॉल खेलते हुए उनका खिलखिलाहट - सब कुछ जीवन से भरपूर था। ऐसा लगा जैसे सीमित संसाधनों में भी असीम सपने पल रहे हों।

शाम 6:30 बजे की प्रार्थना सभा इस यात्रा का सबसे पवित्र क्षण बन गई। धोती धारण किए बच्चे, एक स्वर में गूँजता गायत्री मंत्र और वातावरण में घुली शांति - उस पल ने मन को भीतर तक स्पर्श किया। लगा जैसे संस्कारों की धारा बह रही हो, जो इन बच्चों के जीवन को दिशा दे रही है। इसके पश्चात मिला सादा, पौष्टिक और प्रेम से बना भोजन - जो पेट ही नहीं, मन को भी तृप्त कर गया।

इस हॉस्टल की देखभाल रंजीतदा करते हैं, जो पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं। उनका स्नेह, धैर्य और सतत मार्गदर्शन बच्चों के लिए पिता तुल्य है। उनके प्रयासों में सेवा नहीं, साधना झलकती है।

यात्रा के दौरान हमने दो गाँवों के शिशु शिक्षा केंद्र भी देखे। नन्हे-नन्हे बच्चे अंग्रेज़ी और गणित की बुनियादी शिक्षा सीखते हुए मिले। कड़ाके की ठंड में भी उनके पास पर्याप्त गर्म वस्त्र नहीं थे - यह दृश्य मन को विचलित कर गया। फिर भी उनके चेहरे पर सीखने की चमक थी, जैसे परिस्थितियाँ नहीं, सपने बड़े हों।

वास्तव में, पूर्वांचल कल्याण आश्रम आदिवासी समाज के उत्थान का एक मौन संकल्प है - जो शिक्षा, संस्कार और आत्मनिर्भरता के दीप जलाकर अँधेरों से लड़ रहा है। हमारे प्रवास के समय बच्चों की परीक्षाएँ चल रही थीं, इसलिए उनसे अधिक संवाद नहीं हो सका, किंतु उनकी मेहनत और लगन ने बिना शब्दों के बहुत कुछ कह दिया।

यह यात्रा मेरे लिए केवल स्मृति नहीं, प्रेरणा बन गई। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह सेवा-यज्ञ अनवरत चलता रहे और इन बच्चों के जीवन में उज्ज्वल भविष्य की रोशनी फैलती रहे।

# अभिभावक की अनुभूति

*- श्रीमती पूजा चौधरी और श्रीमान सिद्धार्थ चौधरी*

अनुभव को शब्दों में बाँधना आसान नहीं, फिर भी मैं अपनी अनुभूति को साझा करने का प्रयास कर रहा हूँ। मेरी दोनों बेटियाँ ख्याना और श्वेता वन-जीवन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए कोलकाता से गोसाबा गयीं। पहले तो मुझे लगा कि यह पिकनिक जैसा होगा। परंतु इस वन-जीवन ने बच्चों को केवल प्रकृति से ही नहीं, स्वयं से भी जोड़ दिया। ख्याना में आत्मविश्वास, अनुशासन और सहयोग की भावना स्पष्ट रूप से बढ़ी है। छोटी-छोटी बातों में धैर्य रखना, दूसरों की सहायता करना और संसाधनों का सम्मान करना मेरी बेटियों ने वहीं सीखा। ख्याना और श्वेता के व्यवहार में भी संवेदनशीलता, आत्मनियंत्रण और जिम्मेदारी का सुंदर विकास दिखाई देने लगा है।

यह कार्यक्रम केवल एक गतिविधि न होकर बल्कि संस्कारों की सजीव पाठशाला थी – जहाँ बच्चों ने सादगी सह अस्तित्व और प्रकृति-प्रेम को जीकर सीखा। एक अभिभावक के रूप में हमें गहरा संतोष है कि हमारे बच्चे केवल अच्छे विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि बेहतर इंसान बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

ख्याना और श्वेता के पिता ने कहा –

''हमारी बच्ची ला मार्टीनियर जैसे प्रतिष्ठित विद्यालय में पढ़ती है, जहाँ वह सभी विषयों का ज्ञान लेती है, पर एक विषय अक्सर छूट जाता है – जीवन। वन-जीवन ने मेरी बच्चियों को वही जीवन-दर्शन सिखाकर लौटाया।''

वन-जीवन कार्यक्रम के दौरान हमारी बच्चियों ने जीवन को बहुत समीप से देखा। छोटे-छोटे वनवासी बच्चों को सीमित साधनों में भी प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीते देख, उन्होंने जीवन की वास्तविक सच्चाई को समझा। जब मैंने कहा कि उन बच्चों के पास अभाव बहुत हैं, तो बेटी ने सहज भाव से उत्तर दिया –

''नहीं, वे लोग तो बहुत खुश हैं।''

यही अनुभूति हमारे लिए इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम के इस संस्कारक्षम वन-जीवन कार्यक्रम के लिए हृदय से आभार। मैं कामना करता हूँ कि मेरी बेटियाँ प्रतिवर्ष वनजीवन शिविर में जाए और वहाँ से संस्कार समृद्ध होकर लौटे।

# स्नेह की सुगंध से महका बचपन

*- अनीता बूबना, वस्तु प्रमुख – महानगर*

पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा दक्षिण बंगाल में संचालित 560 शिशु शिक्षा केंद्रों में अध्ययनरत डेढ़ वर्ष से पाँच वर्ष तक के नन्हे-मुन्ने बच्चों के लिए 10,000 स्वेटरों की आवश्यकता अनुभव की गई थी। यह केवल वस्त्र उपलब्ध कराने का कार्य नहीं, बल्कि मासूम जीवन को स्नेह और संरक्षण की ऊष्मा प्रदान करने का संकल्प था। कार्यकर्ताओं के समर्पण और दानदाताओं के उत्साह से मात्र 15 दिनों के भीतर 11,300 स्वेटर एकत्रित कर भेजे गए। सभी स्वेटर समय पर बच्चों तक पहुँच गए और बच्चों ने उन्हें पहन भी लिया। मासूम चेहरों पर खिली मुस्कान ने इस सेवा अभियान को अत्यंत सार्थक और प्रेरणादायी बना दिया, जो समाज की करुणा, सहभागिता और सेवा-भाव का जीवंत उदाहरण है।

*पृष्ठ 18 - काव्यात्मक पहेली की शब्द-सहायता*

वन । जन । संस्कृति । परंपरा । प्रकृति

बोधकथा

# शक्ति की नहीं, संतुलन की जीत

एक बार हवा और सूरज में बहस छिड़ गई। हवा ने कहा कि - 'मैं तुमसे अधिक बलवान हूं।' सूरज बोला- 'नहीं; मैं तुमसे ज्यादा बलवान हूं।' इतने में हवा की नजर उधर आ रहे हैं एक आदमी पर पड़ी। उसने कहा इस तरह बहस करने से कोई फायदा नहीं, वह आदमी इस तरफ आ रहा है जो उसका कोट उतरवा दे वही ज्यादा बलवान है। सूरज हवा की बात मान गया। उसने कहा- 'ठीक है दिखाओ अपनी ताकत।' हवा ने अपनी ताकत दिखानी शुरू की, आदमी की टोपी उड़ गई पर उसने कोट अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और जल्दी-जल्दी बटन बंद करने लगा। उसने कोट नहीं उतारा। बहुत देर तक हवा कोट उतरवाने के लिए तेज-तेज चलती रही, अंत में वह हार गई। फिर सूरज की बारी आई। सूरज ने अपनी प्रचंड गर्मी के तेवर दिखाना चालू किया। आदमी थोड़ी देर अपने पसीने पौछता रहा बाद में उसने कोट उतार कर अपने सिर पर रख लिया। हवा समझ चुकी थी कि सूरज मुझसे ज्यादा ताकतवर है। इसलिए चुपचाप धीरे-धीरे चली गई। इस कथा का निचोड़ यह है कि कभी भी अपनी ताकत का घमंड नहीं करना चाहिए। अहंकार को एक दिन अवश्य ही पराजित होना पड़ता है।

## अमृत वचन

*जब तक मन शांत नहीं होता, तब तक जीवन में सच्चा आनंद नहीं मिलता।*

*– रामकृष्ण परमहंस*

कविता

# शत वर्षों की साधना

*- लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खीदा'*

*संघ बीज वट वृक्ष बन गया,*
*जड.है शक्ति-उपासना।*
*शत-शत बाधाओं में निखरी,*
*विश्व व्यापिनी भावना।*
*शत वर्षों की साधना...*
*हिंदु-हृदय संवेदना ।।ध्रु।।*

*जैन, बौद्ध, वैष्णवी, खालसा,*
*आर्य, द्रविड़ सब सनातनी।*
*पंथ विविध गंतव्य एक है,*
*सब में समरसता लानी।।*
*भेदभाव और छुआछूत के,*
*इस विकार को त्यागना।*
*हर कुटुंब का करें प्रबोधन,*
*हो सामाजिक चेतना ।।1।।*
*शत वर्षों की साधना...*

*स्व का बोध जगा हर मन में,*
*भाव स्वदेशी अपनाएं।*
*खान-पान, भाषा -भूषा का,*
*निज गौरव मन में लाएं।।*
*पर्यावरण सुरक्षा के हित,*
*जल, जमीन, जंगल रचना।*
*भूमंडल हित, परंपरागत,*
*संस्कारों को अपनाना ।।2।।*
*शत वर्षों की साधना...*

*नर-नारी के कर्त्तव्यों का,*
*भान रहे और ध्यान रखें।*
*मानवता की रक्षा के हित,*
*मानव सुलभ विचार रखें।।*
*जाति, पंथ के अहंकार से,*
*ग्रसित जनों को समझाना।*
*अहंकार को त्यागो, सीखो,*
*जीना और जीने देना ।।3।।*
*शत वर्षों की साधना...*

# वन-जीवन 2025

*मिट्टी, पेड़ और प्रकृति से जुड़ता जीवन व्यापार।*
*वनजीवन से सीख रहे जीवन का सच्चा सार।।*

# मकर संक्रांति 2026

*दायित्व बोध जगाने सजा सेवा का शिविर।*
*मानवता संग राष्ट्रभाव हुआ प्रखर।।*

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

**Purvanchal Kalyan Ashram**
161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com